शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय
जगदलपुर बस्तर (छ.ग.)

हिन्दी भाषा प्रवीणता

इकाई – 1
भाषा की प्रकृति

Mr. Pankaj Kumar Ganwire
Guest Lecturer
SOS In Education
S.M.K.V.V. Bastar, Jagdalpur

भाषा की प्रकृति

- भाषा क्या है ?
- हिन्दी भाषा की प्रकृति
- हिन्दी भाषा की विशेषताएँ
- आवश्यकता और महत्व

भाषा

1. प्रस्तावना
2. भाषा का अर्थ
3. भाषा की परिभाषा
4. भाषा की प्रकृति एवं विशेषताएँ
5. भाषा की आवश्यकता, महत्व
6. निष्कर्ष

प्रस्तावना

- मानव जिस शक्ति से प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है वह शक्ति भाषा की शक्ति है। संसार के अन्य प्राणियों के पास अपनी अपनी भाषाएं है परन्तु विचार प्रधान भाषा केवल मानव के पास है।
- भाषा विचार–विनिमय का सर्वश्रेष्ठ साधन हैं। भाषा ही शिक्षा एवं ज्ञान का प्रमुख आधार है बिना भाषा के शिक्षा व ज्ञान प्राप्त किया ही नहीं जा सकता भाषा के द्वारा किसी समाज का ज्ञान सुरक्षित रहता है।

भाषा का अर्थ

- भाषा शब्द संस्कृत की भाष धातु से बना है भाष का अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है, जिसे बोला जाए।
- बोलते तो संसार के प्रायः सभी प्राणी है। प्रत्येक जीवधारी गाय, बन्दर, कुत्ता, बिल्ला, चिड़िया आदि परस्पर विचारों एवं भावों के आदान प्रदान हेतु किसी न किसी प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं परन्तु हम उनके विचार विनिमय को भाषा नही कहते है। उनकी भाषा केवल सांकेतिक होती है जबकि मानव की भाषा का स्वरूप केवल सांकेतिक न होकर लिखित है।
- विचार और भाव विनियम के साधन के लिखित रूप को ही हम वस्तुतः भाषा कहते है। इस प्रकार मनुष्य के भावों विचारों और अभिप्रेत अर्थों की अभिव्यक्ति के ध्वनि प्रतीकमय साधन को भाषा कहते है।

भाषा की परिभाषा

- सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार –

“भाषा के अभिर्भाव से सर मानव संसार गूँगों की विराट बस्ती बनने से बच गया ।”

- काव्याउर्श के अनुसार –

“यह समस्त तीनों लोक अंधकारमय हो जाते, यदि शब्द रूपी ज्योति से यह संसार प्रदीप्त न होता । ”

परिभाषा

- डॉ. भोलानाथ तिवारी –

"भाषा उच्चारणव्यययों से उच्चरित मूलतः प्राय याएच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान प्रदान करते हैं ।"

- आचार्य किशोरीदास बाजपेयी –

"विभिन्न अर्थों में सांकेतिक शब्द–समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने मनोभाव दूसरे के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं ।"

- पं कामता प्रसाद गुरु के अनुसार –

"भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के समक्ष बहाली भांति प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्टतया समझ लेता है।"

- उपयुक्त परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है की भाषा वह साधन है जिसके द्वारा एक प्राणी दूसरे प्राणी पर अपने विचार, भाव या इच्छा प्रकट करता है दूसरे के विचार भाव आदि को ग्रहण करता है।

भाषा की प्रकृति एवं विशेषताएँ

1. भाव–प्रेषण का साधन :– भाषा के अभाव में मनुष्य संकेत के द्वारा ही अपने विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है। भाषा के द्वारा ही एक व्यक्ति अपने भावों को अभिव्यक्त करके दूसरों तक पहुँचा सकता है।
2. मानव मुख से निःसृत :– मानव मुख से निकलने वाले ध्वनि संकेतों की व्यवस्था को भाषा कहते है। पक्षियों की बोलियों तथा निरर्थक ध्वनि समूह को भाषा नहीं कहा जा सकता है।
3. सार्थक एवं विश्लेषणीय धानि – वे ही ध्वनियाँ भाषा के अंतर्गत आती है जो सार्थक होती है, सार्थक शब्द निर्माण करती है तथा जिनका विवेचन विश्लेषण किया जा सकता है।

4. अर्जित सम्पत्ति –भाषा मनुष्य को पैतृक सम्पति के रूप में जन्म से ही प्राप्त नही होती है। यह एक अर्जित सम्पति है। जो अनवात रूप से जीवन पर्यन्त चलता रहता है।
5. सामाजिक प्रकिया है – भाषा का उद्भव और विकास मनुष्य की समाजिकता के फलस्वरूप हुआ है। पारस्परिक सहयोग सम्पर्क और विचार–विनियम की आकांक्षा ने ही भाषा का विकास किया है। भाषा व्यक्ति और समाज को जोडने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। समय समाज में रहकर ही भाषा का अर्जन एवं विकास करता है।
6. सृजनात्मकता –
7. परिवर्तनशीलता – समस्या के अनुसार
8. अनुकरण या गृहणता –

भाषा की आवश्यकता

- मानव का जीवन विकासोन्मुख करने के लिए हर घड़ी भाषा की आवश्यकता है। मानव जीवन में भाषा अगर नहीं होती तो उनका जीवन पशुओं के समान गया– बीता हो जाता। पूरा संसार सूना हो जाता। भाषा की आवश्यकता को निम्न आधार पर देख सकते हैं–
- ज्ञान वृद्धि के लिए :–
- ज्ञान का संरक्षण करने के लिए:–
- विचार–विनिमय के लिए :–
- मनुष्य के व्यक्तिगत विकास के लिए :
- सुसंस्कृत नागरिक निर्माण करने के लिए:–

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति

- हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से निकली है जिसका उपयोग उत्तरी भारत में किया जाता है। ”हिन्दी भाषा ”एक वह बोली है जिसके द्वारा इंसान अपने मन के विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करता है। हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा मानी गई है।
- हिन्दी भाषा का विकास :हिन्दी भाषा का विकास कुछ इस प्रकार है

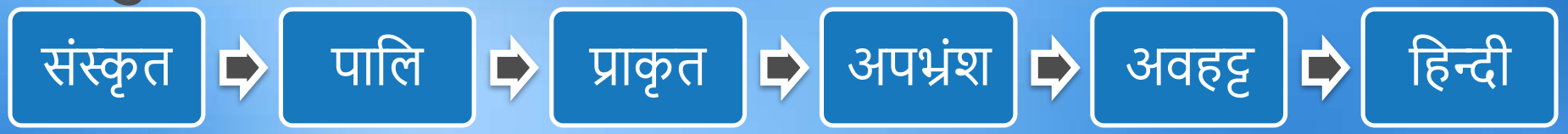

हिन्दी भाषा के जनक

- हिन्दी भाषा के जनक ″भारतेन्दु हरिशचन्द्र ″को माना गया है। जिन्होने हिन्दी भाषा को बहुत सरल और सुंदर पंक्तियों के साथ लोगो के सामने रखा, जिससे हिन्दी भाषा का प्रचलन तो बढ़ा ही साथ में हिन्दी भाषा ने लोगों का ध्यान भी आकर्षित किया।

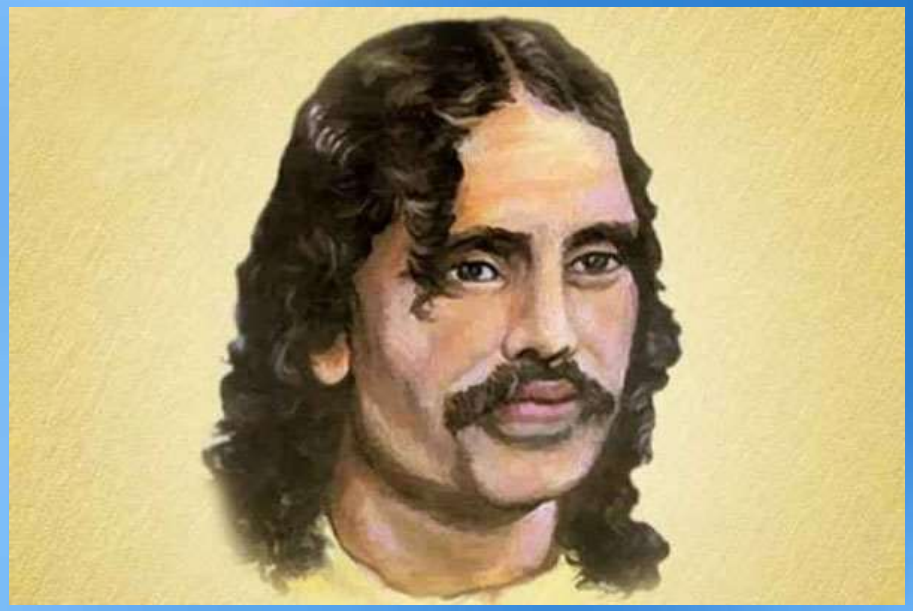

हिन्दी भाषा ही प्रकृति एवं विशेषताएं

- हिन्दी के व्याकरणिक नियम प्राय! अपवाद रहित है इसलिए आसान है।
- हिन्दी की वर्णमाला दुनिया की सर्वाधिक व्यवस्थित वर्णमाला है। हिन्दी की लिपि (देवनागरी) विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है।
- मानक हिन्दी भाषा ही देश की अधिकृत भाषा है जो विभिन्न स्थानों पर भी एक सुनिश्चित व सुनिर्धारित रूप में मान्य होती हो।
- हिन्दी का शब्दकोष बहुत विशाल है और एक–एक भाव को व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्द है।

- हिन्दी भाषा एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवाद विहीन है।
- हिन्दी भाषा देशी भाषाओं एवं अपनी बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती।
- हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से अधिक है जबकि अंग्रेजी के मूल शब्द दस हजार है।
- हिन्दी दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है !

हिन्दी भाषा की आवश्यकता एवम् महत्व

1. विचार संप्रेषण का सरलतम साधन
2. शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ माध्यम
3. सामाजिक विकास
4. व्यक्तित्व के विकास में सहायक
5. राष्ट्रीयता का विकास
6. छात्रों की सृजनात्मक क्षमता का विकास
7. ज्ञान का प्रसारण एवम् सरक्षण
8. संस्कृति के विकास में सहायक

धन्यवाद